क्या है अर्थ ऑवर ?

राहुल रोहिताश्व
भागलपुर, बिहार

हमारी पृथ्वी जिसे वैज्ञानिक 'द ब्लू प्लैनेट' 'द प्लैनेट ऑफ वाटर्स' आदि नामों से संबोधित करते हैं शायद अब तक ज्ञात ग्रहों तथा उपग्रहों में यह एकमात्र ऐसा ग्रह जहाँ जीवन है। एक तरफ तो इसकी सूर्य से उचित दूरी तथा दूसरी तरफ इसके पर्यावरणीय घटक इसे जीवन के लिए पर्याप्त माहौल मुहैय्या कराते हैं। लाखों–अरबों सालों के अपघटन तथा विघटन के फलस्वरूप आज पृथ्वी पर जीवन अपने पूर्ण शबाब पर है। जीवन जीने की जद्दोजहद में इस पृथ्वी पर न जाने कितने भाँति–भाँति के जीवों का अवतरण हुआ तथा कितने ही इस रेस में काल–कवलित हो गए। यह तो हमारी प्रकृति का नियम है कि जो जीव अपने–आप को बदलती परिस्थितियों में ढाल पाए वे जीवित रह गए तथा जो इस मामले में फिसड्डी रह गए वे पृथ्वी के चेहरे से अंततः गायब हो गए। पर आज के परिदृश्य में हम देखें तो स्थिति बिल्कुल ही गंभीर प्रतीत हो रही है। यह काफी काबिले–तारिफ बात है कि इंसान या मानव, जिसे प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना समझा जाता है, ने प्रकृति प्रदत्त बुद्धि, ज्ञान तथा विवेक से इतनी तरक्की कर ली है जिसे शब्दों से बयाँ नहीं किया जा सकता है। परंतु इसका एक स्याह पक्ष भी है। इस तरक्की के क्रियान्वयन हेतु उसने अपनी शस्य–श्यामला पृथ्वी को नष्ट करने में कोई भी कसर बाकी न छोड़ी है। आज इन्हीं कारस्तानियों का नतीजा है कि हमारी पृथ्वी गंभीर संकटों से गुजर रही है। एक तरफ तो ऊर्जा के अतिशय प्रयोगों से ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों के हनन होने का खतरा मंडरा रहा है वहीं दूसरी ओर ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वन तथा वन्य जीवों का असमय विनाश आदि संकट सुरसा की तरह मुँह खोले खड़ी है। यदि इनका समुचित हल नहीं खोजा गया तो हो सकता है आने वाले समय में पृथ्वी जीवन विहीन हो जाए।

अतः ऐसे ही आसन्न संकटों से पृथ्वी को बचाने, तथा वैश्विक स्तर पर जन–जागरूकता फैलाने हेतु वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) द्वारा हर वर्ष 31 मार्च को देर शाम 8:30 से 9:30 बजे तक एक घंटे के लिए बत्ती गुल करके जलवायु परिवर्तन से लड़ने हेतु अर्थ–ऑवर चलाया गया एक अभियान है। इस अभियान का मुख्य मकसद विश्व के प्रमुख शहरों में एक घंटे के लिए गैर जरूरी बिजली को स्विच ऑफ कर ऊर्जा की बचत करना है। यह किसी खास देशों तक ही सीमित न होकर एक ग्लोबल अभियान है। इस दौरान दुनिया के लगभग 10,000 महत्वपूर्ण शहरों की बत्ती, स्विच ऑफ करने का प्रस्ताव किया गया है ताकि इससे पृथ्वी को बचाने का मैसेज जन–जन तक पहुँच सके। यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो इस अभियान का मकसद पर्यावरण को बचाने के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करना और इस दिशा में लोगों द्वारा उठाई जाने वाली आवाज के प्रति नीति–नियंताओं का ध्यान आकृष्ट करना है जिससे एक ऐसे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण हो सके जहाँ दुनिया के सभी लोग प्रकृति की छत्र–छाया में रह सकें। सन् 2007 में ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर से शुरू होने वाला यह अभियान हर वर्ष मार्च महीने के आखिरी शनिवार को हर जगह स्थानीय समय के अनुसार 8:30 बजे से 9:30 बजे तक मनाया जाता है। बड़ी ही खुशी की बात है कि छोटे स्तर पर ही सही पर विस्तृत उद्देश्य के रूप में मनाया जाने वाला यह अभियान आज एक ग्लोबल रूप अख्तियार कर चुका है।

भारत की भागीदारी

भारत पहली बार सन् 2009 से इस अभियान में शामिल हो चुका है। पहली बार देश के 56 शहरों में लगभग पचास लाख लोगों ने एक घंटे के लिए गैरजरूरी बिजली को स्विच को ऑफ रखकर इस मुहिम में शिरकत की। देश के सौ सार्वजनिक और निजी संस्थानों ने भी भागीदारी कर इस मुहिम को एक अलग आयाम दिया। यदि इसके परिणाम की बात करें तो पहली बार अर्थ ऑवर

मनाकर देश ने एक घंटे के स्विच ऑफ से करीब एक हजार मेगावाट बिजली की बचत की। बड़ी ही खुशी की बात है कि भारत सरकार ने भी इस मुहिम को प्रमोट करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है। जिससे यह मुहिम दिनोंदिन लोकप्रिय होती जा रही है तथा लाखों लोग इससे जुड़ रहे हैं। लोगों के सरोकार से जुड़े इस मुहिम ने बड़े ही कम समय में नित नई ऊँचाइयों को छुआ है। इसी का परिणाम है कि पिछले वर्ष भारत के 130 शहरों में 'अर्थ आवर कार्यक्रम' आयोजित किए गए और लोगों को न्यूनतमय कार्बन जीवनशैली जीने की प्रेरणा दी गई।

उज्ज्वल भविष्य

देखने तथा सुनने में यह अभियान भले ही मामूली लगता हो परंतु सच्चाई यह है कि मात्र एक घंटे तक बिजली के प्रयोग को न्यून कर हम न जाने कितनी ऊर्जा की बचत कर लेते हैं जिसका उपयोग जरूरी चीजों में किया जा सकता है। आज हमारी पृथ्वी एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है कि हमारी जरा सी भूल और चूक से वह तबाह हो सकती है। अतः इस पृथ्वी को बचाने हेतु यह हमारा परम् कर्त्तव्य है कि हम इसके पुनरुत्थान के लिए जरूरी कदम उठाएँ। शायद अर्थ ऑवर कार्यक्रम का भी यही उद्देश्य है। मित्रों, तो फिर देर किस बात की है? जलवायु परिवर्तन से लड़ने और भावी पीढ़ियों के लिए ऊर्जा बचाकर रखने के लिए हम प्रतिदिन अर्थ–ऑवर मनाकर मानवता के प्रति अपना कर्त्तव्य निभा सकते हैं। अतः इसमें अतिश्योक्ति की बात नहीं है कि यह अंधेरा कल के उजाले के लिए मनाए जाने वाले 'अर्थ ऑवर' का प्रतीक होगा।